वीतराग शासन जयवंत हो

कल्याण मंदिर स्तोत्र विधान

माण्डला

मध्य में - ॐ
प्रथम वलय - 8
द्वितीय वलय - 16
तृतीय वलय - 20
कुल वलय - 44 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज

कल्याण मंदिर स्तवन

दोहा - अहिच्छत्र में पार्श्व जिन, पाए केवल ज्ञान।
भाव सहित उनका यहाँ, करते हम गुणगान।।

(शम्भू-छन्द)

हे पार्श्वनाथ करुणा निधान !, उपसर्ग विजेता तीर्थंकर।
हे परम ब्रह्म हे कर्मजयी !, हे मोक्ष प्रदाता शिवशंकर।।
हम नमन करें तव चरणों में, शुभ भावों से गुणगान करें।
स्वातम रस परमानन्दमयी, सुज्ञान सुधा का पान करें।।1।।
वैशाख कृष्ण द्वितिया तिथि को, वामा के गर्भ पधारे थे।
श्री आदि देवियों ने आकर, माता के चरण पखारे थे।।
शुभ पौष वदी ग्यारस तिथि को, श्री पार्श्वनाथ ने जन्म लिया।
तब मेरु सुदर्शन के ऊपर, इन्द्रों ने शुभ अभिषेक किया।।2।।
वह धन्य घड़ी थी धन्य दिवस, हो गई बनारस शुभ नगरी।
श्री अश्वसेन जी धन्य हुए, हो गई धन्य जनता सगरी।।
नौ हाथ उच्च तन था प्रभु का, शुभ हरितवर्ण जो पाये थे।
सौ वर्ष आयु पाने वाले, पग नाग चिन्ह प्रगटाये थे।।3।।
तिथि पौषवदी एकादशि को, उत्तम संयम जिनवर धारे।
देवों ने हर्षित होकर के, प्रभुवर के बोले जयकारे।।
वन में जाकर प्रभु योग धरा, तन से ममत्व को त्याग किए।
निज आत्म सुधारस को पाया, निज से निज का ही ध्यान किए।।4।।

जब क्षपक श्रेणी पर चढ़े आप, घाती कर्मों का नाश किया।
श्री चैत्र कृष्ण की तिथि चौथ, प्रभु केवलज्ञान प्रकाश किया।।
शुभ ज्ञान लता फैली जग में, भव्यों को शुभ संदेश दिया।
श्रावण शुक्ल सप्तमी को प्रभु ने, मोक्ष महल को वरण किया।।5।।

दोहा- पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा अगम अपार।
अतः भक्ति करते 'विशद', जिन पद बारम्बार।।

।। इत्याशीर्वादः।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

कल्याण मन्दिर स्तोत्र पूजा

स्थापना

कुमुद चन्द्र आचार्य प्रवर जी, किए पार्श्व जिन का गुणगान।
हुआ प्रसिद्ध लोक में पावन, कल्याण मंदिर स्तोत्र महान।।
जिनकी अर्चा करने को हम, करते यह स्तोत्र विधान।
हृदय कमल में पार्श्व प्रभु का, विशद भाव से है आह्वान।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्र व्रताराध्य श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर सवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितोभव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

भोगों में लीन रहे प्रभुवर, इसमें ही सदा लुभाए हैं।
भौतिक पदार्थ में सुख माना, वह पाकर के हर्षाए हैं।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं नि.स्वाहा।

सन्तप्त हृदय मेरा प्रभुवर, चन्दन से ना शीतल होता।
हम नित्य कषाएँ करते हैं, पछताते और जीवन खोता।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चन्दनं नि.स्वाहा।

प्रभु बाह्याभ्यन्तर शुद्ध रहे, अक्षत सम गुण प्रभु तेरे हैं।
हम भटक रहे चारों गति में, ना मिटे जगत के फेरे हैं।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं नि.स्वाहा।

उपवन के पुष्प रहे अनुपम, ना पुष्प आप सा कोई है।
अफसोस है ज्ञानी यह आतम, फिर भी अनादि से सोई है।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं नि.स्वाहा।

नाना व्यंजन खाये हमने, फिर भी मन में ना शांति हुई।
चेतन को भोजन दिया नहीं, जिससे जीवन में भ्रान्ति हुई।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं नि.स्वाहा।

दीपक जग का तम खोता है, आतम का तम ना मिटता है।
अन्तर में जले ज्ञान दीपक, कर्मों का राजा पिटता है।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं नि.स्वाहा।

कर्मों की धूप सताती है, हे नाथ! कर्म वसु जल जाएँ।
हम धूप जलाते अग्नि में, तव गुण की प्रभु छाया पाएँ।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं नि.स्वाहा।

आँधी कर्मों की चले विशद, पुरुषार्थ हीन हो जाता है।
जो ध्यान करे निज आतम का, वह मोक्ष महाफल पाता है।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं नि.स्वाहा।

पथ मिले हमें बाधाओं के, अब दूर करें वे बाधाएँ।
जग की उलझन में उलझ रहे, सब छोड़ विशद मुक्ती पाएँ।।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र के द्वारा, प्रभु के गुण हम गाते हैं।
पार्श्व प्रभू की अर्चा करके, पद में शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं कल्याण मंदिर स्तोत्राराध्य श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

दोहा- कल्याण मन्दिर स्तोत्र का, किया यहाँ गुणगान।
यही भावना है विशद, पाएँ शिव सोपान।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

दोहा- पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
भक्ती के फल से सभी, पाएँ सौख्य अपार।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

कल्याण मन्दिर विधान की अर्घावली

दोहा- कल्याण मन्दिर स्तोत्र यह, पूजा करें विधान।
भाव सहित जो भी करें, पावें जग सम्मान।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अभीप्सित कार्य सिद्धिदायक

कल्याणमन्दिर - मुदार - मवद्य - भेदि,
भीता-भय-प्रदम-निन्दित-मङ्घ्रिपद्मं।
संसार सागर निमज्ज-दशेष जन्तु,
पोतायमान मभिनम्य जिनेश्वरस्य।।1।।

हे कल्याण! धाम गुणवान, भव सर तारक पोत महान।
शिव मंदिर अघहारक नाम, पार्श्वनाथ के चरण प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं भव समुद्र पतज्जन्तु तारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सर्वसिद्धिदायक

यस्य स्वयं सुरगुरुर्-गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृत-मतिर्-न विभुर्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठस्मय धूमकेतोस्,
तस्याह मेष किल संस्तवनं करिष्ये।।2।।

सागर सम हैं गौरववान, सुरगुरु न कर सकें बखान।
भंजन किया कमठ का मान, तव करता प्रभु मैं गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

जलभय निवारक

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-,
मस्मादृशाः कथमधीश! भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिक शिशुर्-यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः।।3।।

तव स्वरूप प्रभु अगम अपार, मंदबुद्धि न पावे पार।
प्रखर सूर्य ज्यों आभावान, उल्लू देख सके न आन।।3।।

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

असमय निधन निवारक

मोह-क्षयादनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत्।
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-,
मीयेत केन जलधेर्-ननु रत्नराशिः।।4।।

मोह की भी हो जाए हान, कह पावें तव को गुणगान।
जल सागर से भी बह जाय, प्रकट रत्न भी को गिन पाय।।4।।

ॐ ह्रीं गहन गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

प्रछन्न धन प्रदर्शक

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्य-गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निज- बाहु-युगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः।।5।।

तुम गुण रत्नों के आगार, मैं मतिहीन बुद्धि अनुसार।
ज्यों बालक निज बाँह पसार, उद्यत करने सागर पार।।5।।

ॐ ह्रीं परमोन्नत गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

संतान सम्पत्ति प्रदायक

ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश!,
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेव-मसमीक्षित-कारितेयं।
जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि।।6।।

तव गुण गाने को लाचार, योगी जन भी माने हार।
ज्यों पक्षी बोले निज बान, त्यों करते हम तव गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं अगम्य गुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अभीप्सित जनाकर्षक

आस्तामचिन्त्य-महिमा जिन! संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्राऽऽतपो - पहत - पान्थ - जनान्निदाघे,
प्रीणाति पद्म-सरसः स-रसोऽनिलोऽपि।।7।।

तव महिमा जिन! अगम अपार, नाम एक जग जन आधार।
पवन पद्म सरवर से आय, ग्रीष्म तपन को पूर्ण नशाय।।7।।

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

कुपितोपिदंश विनाशक

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो! शिथिली भवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म-बन्धाः।
सद्यो भुजङ्गम-मया इव मध्य-भाग-,
मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य।।8।।

मन से ध्यायें जिन अर्हन्त, कर्म बन्ध हों शिथिल तुरन्त।
बोले ज्यों चन्दन तरु मोर, नाग डरें भागे चहुँ ओर।।8।।

ॐ ह्रीं कर्मबन्ध विनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पूर्णार्घ्यं

दोहा- अष्टम वसुधा प्राप्त हो, हमको हे भगवान!।
अष्ट द्रव्य के अर्घ्य से, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं हृदय स्थिताय अष्ट दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सर्पवृश्चिकविष विनाशक

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!
रौद्रै-रुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाऽऽशु पशवः प्रपलायमानैः।।9।।

जिन दर्शन यों विपद नशाय, सूर्योदय से तम नश जाय।
निशि में पशु ज्यों घेरें चोर, देख ग्वाल को भागे छोड़।।9।।

ॐ ह्रीं दुष्टोपसर्ग विनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

तस्कर भय विनाशक

त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जल मेष नून-,
मन्तर्गतस्यऽमरुतः स किलानुभावः।।10।।

भविजन तारक आप जिनेश, भवि जीवों के लिए विशेष।
मसक कराए सिन्धू पार, त्यों जन करते जिन उद्धार।।10।।

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

जलाग्निभय विनाशक

यस्मिन् हर-प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावाः,
सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन।।11।।

काम से ज्यों हारे सब देव, विजय आप कीन्हे जिनदेव।
जल अग्नी का कर दे नाश, बड़वानल फिर करें विनाश।।11।।

ॐ ह्रीं अनंगमथनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अग्नि भय विनाशक

स्वामिन्ननल्प - गरिमाणमपि प्रपन्नास्-,
त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः।।12।।

गुणानन्त हैं को गिन पाय, तुलना किसी से ना हो पाय।
प्रभु की महिमा अगम अपार, हृदय धरे पाए भव पार।।12।।

ॐ ह्रीं अतिशय गुरवे क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

जलमिष्ठता कारक

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्मचौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी।।13।।

प्रथम किए प्रभु क्रोध विनाश, कर्म किए फिर कैसे? नाश।
बर्फ वृक्ष को ज्यों झुलसाय, शत्रु क्षमा से जीता जाय।।13।।

ॐ ह्रीं जित क्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

शत्रु स्नेह जनक

त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप-,
मन्वेष-यन्ति हृदयाम्बुज कोष-देशे।
पूतस्य निर्मल-रुचेर्-यदि वा किमन्य,
दक्षस्य संभव-पदं ननु कर्णिकायाः।।14।।

श्रेष्ठ महर्षी महिमा गाय, हृदय में अन्वेषण कर ध्याय।
बीज कर्णिका में उपजाय, हृदय में निज आतम को ध्याय।।14।।

ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

चोरिकागत द्रव्य दायक

ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्म-दशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपल-भावमपास्य लोके,
चामीकरत्वमचिरादिव धातु-भेदाः।।15।।

ज्यों अग्नी में जल पाषाण, स्वर्ण रूपता पाय महान।
त्यों प्रभु का करके भवि ध्यान, पाए वीतराग विज्ञान।।15।।

ॐ ह्रीं कर्मकिट्ट दहनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

गहन वन पर्वत भय विनाशक

अंतः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
एतत्स्वरूपमथ मध्य-विवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः।।16।।

बिठा देह में प्रभु को ध्याय, फिर तन को क्यों नाश कराय।
विग्रह जीव का रहा स्वभाव, सत्पुरुषों का है यह भाव।।16।।

ॐ ह्रीं देह देहि कलह निवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

युद्ध विग्रह विनाशक

आत्मा मनीषिभि-रयं त्वदभेद-बुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीयमप् - यमृत - मित् - यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विष-विकारमपा-करोति।।17।।

हो अभेद प्रभु का कर ध्यान, योगी होवे प्रभू समान।
अमृत मान नीर का पान, कर क्यों होय ना रोग निदान?।।17।।

ॐ ह्रीं संसार विष सुधोपमाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सर्प विष विनाशक

त्वामेव वीत - तमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो! हरि - हरादि धिया प्रपन्नाः।
किं काच-कामलिभिरीश सितोऽपि शंखो,
नोगृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण।।18।।

माने हरिहर ब्रह्मा रूप, अज्ञानी जिन का स्वरूप।
हुआ पीलिया रोग समान, शंख पीत दीखे यह मान।।18।।

ॐ ह्रीं सर्व जन वन्द्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

नेत्ररोग विनाशक

धर्मोपदेश - समये सविधानुभावा-,
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्-यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोधमुपयाति न जीव-लोकः।।19।।

होय देशना प्रभु के पास, तरु अशोक का शोक विनाश।
प्रातः होते ही तरु बोध, निद्रा तज ज्यों पाए विबोध।।19।।

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उच्चाटन कारक

चित्रं विभो! कथम्वाङ्मुख-वृन्तमेव,
विष्वक्-पतत्य-विरला सुर-पुष्प-वृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!
गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि।।20।।

पुष्प वृष्टि करते हैं देव, ऊर्ध्व पाँखुरी रहे सदैव।
डण्ठल कहें रहें प्रभु पास, आते हों कर्मों का नाश।।20।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्प वृष्टि शोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

ज्ञानवृद्धि प्रदायक

स्थाने गभीर-हृदयोदधि-सम्भवाया:,
पीयूषतां तव गिर: समुदीरयन्ति।
पीत्त्वा: यत: परम-सम्मद-संग-भाजो,
भव्याव्रजन्ति तरसाप्-यजरा-ऽमरत्वम्।।21।।

दिव्य ध्वनि प्रभु की गम्भीर, सुधा समान हरे भव पीर।
आकुलता का करे विनाश, अक्षय सौख्य दिलाए खास।।21।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि विराजिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा /
प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मधुर फल प्रदायक

स्वामिन्सुदूर - मवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्येवदन्ति शुचय: सुर - चामरौघा:।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि - पुंगवाय,
ते-नून-मूर्ध्व-गतय: खलु शुद्ध-भावा:।।22।।

चौंसठ चँवर ढुराएँ देव, विनय शील हो झुकें सदैव।
विनयशील जो करें प्रणाम, प्राप्त करें वे मुक्ती धाम।।22।।

ॐ ह्रीं सुर चामर प्रातिहार्य विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा /
प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

राज्य सन्मानदायक

श्यामं गभीर - गिरमुज्ज्वल - हेम - रत्न,
सिंहासनस्थमिह भव्य - शिखण्डिनस्त्वाम्।
आलोकयन्ति - रभसेन नदन्तमुच्चैश्-,
चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम्।।23।।

सिंहासन पर श्री जिनेश, दिव्य ध्वनि प्रगटाएँ विशेष।
ज्यों मेरू पे मेघ समान, हर्षित मोर करे गुणगान।।23।।

ॐ ह्रीं पीठत्रय नायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

शुष्कवनोपवन विनाशक

उद्गच्छता तव शिति-द्युति-मण्डलेन,
लुप्त-च्छदच्छवि-रशोक - तरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग,
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि।।24।।

भामण्डल है आभावान, प्रभा दिखाए श्रेष्ठ महान।
भव्य जीव जो जिन के पास, आके पाएँ मोक्ष निवास।।24।।

ॐ ह्रीं भामण्डल मण्डिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पूर्णार्घ्यं

दोहा- सोलह कारण भावना, भा बनते तीर्थेश।
वह पद पाने हम यहाँ, देते अर्घ्य विशेष।।

ॐ ह्रीं हृदय स्थिताय षोडशदलकमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

विंशति दल कमल पूजा

भो-भो: प्रमादमवधूय भजध्वमेन-,
मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्-नभिनभ: सुरदुन्दुभिस्ते।।25।।

देवों से हो दुन्दुभि नाद, मानो कहे तजो उन्माद।
मुक्ती की मन में जो चाह, जिन पद करो विशद अवगाह।।25।।

ॐ ह्रीं देव दुन्दुभिनादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

वचन सिद्धि प्रतिष्ठापक

उद्योतितेषु भवता भुवनेषुनाथ!,
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकार:।
मुक्ता-कलाप-कलितोरु-सितातपत्र-,
व्याजात्त्रिधा धृत-तनुर्ध्रुवमभ्युपेत:।।26।।

त्रिभुवन पति के सिर पे तीन, छत्र कहे हैं ज्ञान प्रवीण।
तीन रूप ज्यों चाँद दिखाय, खुश हो प्रभु सेवा को आय।।26।।

ॐ ह्रीं छत्र त्रय सहिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा /
प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

वैर-विरोध विनाशक

स्वेनप्रपूरित - जगत्त्रय - पिण्डितेन,
कान्ति - प्रताप - यशसामिव संचयेन।
माणिक्य - हेम - रजत - प्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्-नभितो विभासि।।27।।

स्वर्ण रजत माणिक के (कोट) साल, प्रभु का वैभव रहा विशाल।
तेज कांतिमय प्रभु यशवान, समवशरण शुभ रहा महान।।27।।

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा /
प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

यशः कीर्तिप्रसारक

दिव्य-स्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना-,
मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वापरत्र,
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव।।28।।

इन्द्रों के मुकुटों की माल, जिन पद झुकते गिरे विशाल।
मानो जिन पद में जो आय, चरण छोड़ फिर कहीं ना जाय।।28।।

ॐ ह्रीं भक्त जनान वनपतिराय क्लीं महाबीजाक्षर सहित
कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा /
प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

विशद आकर्षण कारक

त्वं नाथ! जन्म जलधेर् विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्य सुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो! यदसि कर्म-विपाक-शून्या।।29।।

गहन जलाशय को भी पाय, घड़ा अधोमुख पार कराय।
संत विमुख भव सिन्धु से जान, भव तारक हैं पोत महान।।29।।

ॐ ह्रीं निजपृष्ठलग्नभय, तारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित
कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा /
प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

असंभव कार्यसाधक

विश्वेश्वरोऽपि जन-पालक दुर्गतस्त्वं,
किं वाऽक्षर - प्रकृतिरप् - यलिपिस्त्वमीश!
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकास-हेतुः।।30।।

त्रिभुवन पति निर्धन कहलाय, अक्षर कोई लिख ना पाय।
है त्रिकाल ज्ञाता अज्ञान, ज्ञाता सर्व चराचर जान।।30।।

ॐ ह्रीं विस्मयनीय मूर्तये क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

शुभाशुभ प्रश्नदर्शक

प्राग्भार-संभृत-नभांसि-रजांसि रोषा-,
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो।
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा।।31।।

कमठ गगन से धूल गिराय, प्रभु तन को जो छू ना पाय।
तिरस्कार की दृष्टीवान, कर्म बन्ध जो किया महान।।31।।

ॐ ह्रीं कमठोत्थापित धूल्युपद्रव जिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

दुष्टता प्रतिरोधी

यद्गर्जदूर्जित - घनौघमदभ्र - भीम -,
भ्रश्यत्तडिन् मुसल - मांसल - घोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर - वारिदध्रे,
तेनैव तस्य जिन दुस्तर-वारि कृत्यम्।।32।।

मेघ गरज बिजली चमकाय, जल वृष्टी जो भीम कराय।
प्रभु का कुछ भी ना कर पाय, निज पद में जो खड्ग गिराय।।32।।

ॐ ह्रीं कमठकृत जलधारोपसर्ग निवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

उल्कापातातिवृष्ट्यनावृष्टि निरोधक

ध्वस्तोर्ध्व-केश-विकृताकृति-मर्त्य-मुण्ड-,
प्रालम्बभृद् - भयदवक्त्र - विनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः,
सोऽस्याभवत्प्रति भवं भव-दुःख-हेतुः।।33।।

नर मुण्डन की धारी माल, वदन से निकले अग्नी ज्वाल।
प्रेतादिक तप करने भंग, भेज कर्म का पाया बंध।।33।।

ॐ ह्रीं कमठकृत पैशाचिकोपद्रवजिन शीलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

भूत-पिशाच पीड़ा तथा शत्रुभय नाशक

धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य-,
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य-कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक - पक्ष्मल - देह - देशाः,
पाद-द्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः।।34।।

हर्षभाव से जिन पद जाय, माया तज त्रय काल में आय।
विधिवत अर्चा करे कराय, भव-भव के वह कर्म नशाय।।34।।

ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा /
प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

मृगी उन्माद अपस्मार विनाशक

अस्मिन्-नपार-भव-वारि-निधौ मुनीश!
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मंत्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति।।35।।

भव-भव के दुख सहे विशेष, नाम सुना ना कभी जिनेश!।
मंत्र बोल सुनता जो नाम, विपद नाश पाए ध्रुव धाम।।35।।

ॐ ह्रीं पवित्र नामध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा /
प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सर्प वशीकरण

जन्मान्तरेऽपि तव-पाद-युगं न देव,
मन्ये मया महितमीहित-दान-दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां,
जातो निकेतन महं मथिताशयानाम्।।36।।

पूजा वांछित फल दातार, की ना आए प्रभु के द्वार।
सहा हृदय भेदी अपमान, शरण आय पाए सम्मान।।36।।

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अनर्थ नाशक दर्शन

नूनं न मोह-तिमिरावृतलोचनेन,
पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।
मर्मा विधो! विधुरयन्ति हि मामनर्था:,
प्रोद्यत्प्रबन्ध-गतय: कथमन्यथैते।।37।।

मोहाच्छादित रहे विशेष, देख सके ना तुम्हे जिनेश!।
मर्म भेदि कुवचन हे देव!, पर संगति से सहे सदैव।।37।।

ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

असंख्यकष्ट निवारक

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन-जन-बान्धव दु:खपात्रं,
यस्मात्क्रिया: प्रतिफलन्ति न भाव-शून्या:।।38।।

अर्चा पूजा की (तव) पद आन, हृदय धरे ना किन्तु पुमान।
भाव शून्य भक्ती कर देव!, फलदायी ना रही सदैव।।38।।

ॐ ह्रीं भक्तिहीन जनबान्धताय क्लीं महाबीजाक्षर सहित
कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा /
प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

सर्वज्वर शामक

त्वं नाथ! दु:खि जन-वत्सल! हे शरण्य!,
कारुण्य-पुण्य-वसते वशिनां वरेण्य!।
भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय,
दु:खांकुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि।।39।।

शरणागत जन दीनदयाल, पतितोद्धारक हे प्रतिपाल!।
झुका रहे तव पद में शीश, दूर करो दुख दो आशीष।।39।।

ॐ ह्रीं भक्तजन वत्सलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा /
प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

विषम ज्वर विघातक

नि:संख्य - सार - शरणं शरणं शरण्य,
मासाद्य सादित - रिपु प्रथितावदानम्।
त्वत्पाद - पंकजमपि प्रणिधान - वन्ध्यो,
वन्ध्योऽस्मि चेद्भुवन पावन हा हतोऽस्मि।।40।।

अशरण शरण जगत प्रतिपाल, गुणानन्त धर दीनदयाल।
तव पद में रह किया ना ध्यान, सहे कर्म घन घात महान।।40।।

ॐ ह्रीं सौभाग्यदायक पद कमल युगाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अस्त्र-शस्त्र विघातक

देवेन्द्र - वन्द्य विदिताखिल - वस्तुसार!
संसार - तारक विभो! भुवनाधिनाथ।
त्रायस्व देव करुणा - ह्रद मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बु-राशेः।।41।।

सुर वन्दित हे दया निधान!, जग तारक जगपति भगवान।
दुखियों का करते उद्धार, दुख सिन्धू से कर दो पार।।41।।

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थ वेदिने क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

स्त्री सम्बन्धि समस्त रोग शामक

यद्यस्ति नाथ! भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणां,
भक्ते फलं किमपि सन्तत-संचिताया:।
तन्मेत्वदेक - शरणस्य शरण्य भूया:,
स्वामी! त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि।।42।।

किंचित पुण्य से भक्ति जिनेश!, हे प्रतिपालक पाई विशेष।
भव-भव में मेरे भगवान, भक्त बनें आदर्श महान।।42।।

ॐ ह्रीं पुण्य बहुजनसेव्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा /
प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

बन्धन मोचक

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र!,
सान्द्रोल्लसत्पुलक - कंचुकितांगभागाः।
त्वद्बिम्ब-निर्मल-मुखाम्बुज-बद्ध-लक्ष्या,
ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्याः।।43।।

हे जिन! सद्बुद्धी धर आन, दर्श करें खुश हो भगवान।
संस्तव करें सुविधि युत मान, वे पावें सुर पद निर्वाण।।43।।

ॐ ह्रीं जन्म मृत्युनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा /
प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

अन्तिम मंगल

(आर्या छन्द)

जन नयन 'कुमुदचन्द्र'-प्रभास्वराः स्वर्ग-संपदो भुक्त्वा।
ते विगलित-मल-निचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते।।44।।

जन-मन रंजक हे कुमुदेश!,
सुर पद हेतू स्वर्ग प्रवेश।
किंचित् काल भोग (नर-नाथ) भूपेश,
कर्म नाश हों विशद जिनेश।।44।।

ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्रयति सेवितपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहित कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा / प्रज्ज्वलित दीप स्थापनं करोमि।

पूर्णार्घ्यं

दोहा- विंशति दल पूजा करें, पाने शिव सोपान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं विंशति दल कमलाधिपतये श्री पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप : ॐ ह्रीं सर्व विघ्न हराय श्री पार्श्वनाथाय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- पार्श्वनाथ के चरण में, वन्दन करूँ त्रिकाल।
कल्याण मन्दिर स्तोत्र की, गाता हूँ जयमाल।।

(चौपाई)

लोकालोक अनन्तानन्त, कहते केवल ज्ञानी संत।
चौदह राजू लोक महान्, ऊँचा सप्त राजू पहिचान।।1।।
राजू एक मध्य विस्तार, मध्य सुमेरू अपरम्पार।
दक्षिण दिशा रही मनहार, भरत क्षेत्र है मंगलकार।।2।।
आर्य खण्ड में भारत देश, जिसमें भाई रहा विशेष।
उज्जैनी नगरी में जान, विक्रम राजा रहे महान्।।3।।

उसी नगर में भक्त प्रधान, गंगा में करने स्नान।
वृद्ध महर्षी आए एक, जिनमें गुण थे श्रेष्ठ अनेक।।4।।
योग्य भक्त की रही तलाश, देख भक्त को जागी आश।
श्रेष्ठ वदन था कान्तीमान, सुन्दर दिखता आलीशान।।5।।
धक्का उसे लगाया जोर, वाद-विवाद हुआ फिर घोर।
शिष्य बने जिसकी हो हार, शर्त रखी यह अपरम्पार।।6।।
ग्वाल बाल निकला तव एक, निर्णायक माना वह नेक।
कई श्लोक सुनाए श्रेष्ठ, आगम वर्णित रहे यथेष्ठ।।7।।
ग्वाला उससे था अनभिज्ञ, श्रेष्ठ महर्षि अनुपम विज्ञ।
वह दृष्टांत सुनाए नेक, ग्वाला मुग्ध हुआ यह देख।।8।।
भक्त ने गुरु को किया प्रणाम, कुमुद चन्द रक्खा तव नाम।
क्षपणक जिनका था उपनाम, जिन भक्ति था उनका काम।।9।।
आप गये चित्तौड़ प्रदेश, दर्श पार्श्व के हुए विशेष।
था स्तंभ वहाँ पर एक, उसमें थे संकेत अनेक।।10।।
उस कुटीर का खोला द्वार, शास्त्र मिला जिसमें मनहार।
एक पृष्ठ पढ़ने के बाद, बन्द हुआ फिर शीघ्र कपाट।।11।।
अदृश वाणी हुई विशेष, भाग्य नहीं पढ़ने का शेष।
एक बार यौगिक ने आन, चमत्कार दिखलाए महान्।।12।।
क्षपणक को वह माने हीन, बने आप थे ज्ञान प्रवीण।
चमत्कार दिखलाओ यथेष्ट, तब मानेंगे तुमको श्रेष्ठ।।13।।

स्वीकारा क्षण में आह्वान, भक्ति करने लगे महान्।
महाकालेश्वर के स्थान, किया कपिल ने यह ऐलान।।14।।
भूप ने कीन्हा यही कथन, क्षपणक शिव को करो नमन्।
कुमुदचन्द आचार्य मुनीश, देख झुकाएँ अपना शीश।।15।।
गढ़ चित्तौड़ के वही महान्, दिखने लगे पार्श्व भगवान।
देखा वही श्रेष्ठ स्तंभ, भरा हुआ लोगों का दम्भ।।16।।
'आकर्णितोऽपि' आदी यह श्रेष्ठ, गुरु ने बोला काव्य यथेष्ठ।
तेजोमय शुभ आभावान, प्रगटे पार्श्वनाथ भगवान।।17।।
लोग किए तब बारम्बार, जैनाचार्य की जय-जयकार।
जैन धर्म कीन्हा स्वीकार, लोगों ने मुनिवर के द्वार।।18।।
कल्याण मन्दिर यह स्तोत्र, मिला धर्म का अनुपम स्रोत।
करने हम आतम कल्याण, अर्घ्य चढ़ाते प्रभुपद आन।।19।।

(घत्तानन्द छन्द)

जय-जय जिन त्राता, मुक्तीदाता, पार्श्वनाथ जिनवर वन्दन।
जय मोक्ष प्रदाता, भाग्य विधाता, तव चरणों में करूँ नमन्।।20।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रव जिताय कालसर्प दोष शांतिकारक कल्याणकारी श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- पुष्पांजलि हम नाथ!, करते हैं इस भाव से।
'विशद' झुकाएँ माथ, कल्याण मन्दिर स्तोत्र को।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

कल्याण मन्दिर स्तोत्र ऋद्धि मंत्र

१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पासं पासं पासं फणं नमः।

२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दव्वकराए नमः।

३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो समुद्रभयसमनबुद्धीणं नमः।

४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो धम्मराए जयतिए नमः।

५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो धणबुद्धिं कराए नमः।

६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुत्तइच्छी कराए नमः।

७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महाणं झाणाय नमः।

८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उन्ह गदहारीए नमः।

९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो को पं हं सः नमः।

१०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो णमो रपणासणाए नमः।

११. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वारिबाल बुद्धीए नमः।

१२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अग्गल भय वज्जणाय नमः।

१३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो इक्खवज्जणाए नमः।

१४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मोझ्झसण झूसणाए नमः।

१५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तक्खरधणप वप्पियाए नमः।

१६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो णगभयपणासए नमः।
१७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुद्ध बुद्धि णासए नमः।
१८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पासे सिद्धा सुणंति नमः।
१९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खिगदे णासए नमः।
२०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहिल गह णासए नमः।
२१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुप्फिंयतरूपत्ताए नमः।
२२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तरूपत्त पणासए नमः।
२३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वज्जयहरणाए नमः।
२४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामियाए नमः।
२५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो हिंडण मलाणायाए नमः।
२६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जयदेयपासेवत्ताये नमः।
२७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खल-दुट्ठणासए नमः।
२८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उवदव वज्जणाए नमः।
२९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो देवाणुप्पियाए नमः।
३०. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भद्दाए नमः।
३१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वीआणं पत्ताए नमः।

३२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठमट्ठदणासए नमः।

३३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जवित्ताय खित्ताए नमः।

३४. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उंजि अस्सायतक्खणणं नमः।

३५. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मिज्जलिज्जणासए नमः।

३६. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ग्रां हुं फट् विचक्राए नमः।

३७. ॐ ह्रीं अर्हं णमो स्वोभि ह्री खोभिए नमः।

३८. ॐ ह्रीं अर्हं णमो इट्ठि मिट्ठ भक्खं कराए नमः।

३९. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सत्तावरिएगु-णिज्जं नमः।

४०. ॐ ह्रीं अर्हं णमोण्हसौअय णासए नमः।

४१. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वप्पला हव्वए नमः।

४२. ॐ ह्रीं अर्हं णमो इत्थि वत्थ णासए नमः।

४३. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंदि मोक्खए नमः।

४४. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं क्लीं नमः।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- पार्श्वनाथ भगवान हैं, मंगलमयी महान।
विशद भाव से हम यहाँ, करते हैं यशगान।।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
हरी भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।।1।।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।2।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।।3।।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।4।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।।5।।
देवों ने तब रहस रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।6।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।।7।।
पंचाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी था भोला भाला।।8।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।।9।।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।10।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।।11।।
सर्प देख तपसी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।12।।
नाग युगल मृत्यू को पाए, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।।13।।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम देव ने पाया।।14।।
प्रभू बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।।15।।

पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहीक्षेत्र में ध्यान लगाए।।16।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।।17।।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।18।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।।19।।
धरणेन्द्र पद्मावति तब आए, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।20।।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।।21।।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का छत्र लगाया भाई।।22।।
चैत कृष्ण की चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।।23।।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।24।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।।25।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।26।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।।27।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।28।।
योग निरोध प्रभू जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।।29।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ती पाई।।30।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।।31।।
भक्ती से जो ढोक लगाते, भोगी भोग संपदा पाते।।32।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।।33।।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते।।34।।
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।।35।।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।।36।।
पार्श्व प्रभू के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।।37।।

'विशद' तीर्थ जो हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।38।।
भव्य जीव जो दर्शन पाते, अतिशयकारी पुण्य कमाते।।39।।
उभयलोक में वे सुख पाते, अनुक्रम से शिव सुख पा जाते।।40।।

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख-शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

"श्री पार्श्वनाथ जी की आरती"

(तर्ज : ॐ जय...)

ॐ जय पार्श्व प्रभो ! स्वामी जय जय पार्श्व प्रभो !।
तव चरणों में आरति, करते भक्त विभो !।। ॐ जय...।।
जन्म लिए काशी नगरी में, जग जन हितकारी-2
अश्वसेन वामा माँ के सुत, नाग चिन्ह धारी।। ॐ जय...।।1।।
युवा अवस्था में प्रभु तुमने, संयम धार लिया-2
धार दिगम्बर मुद्रा, निज का ध्यान किया।। ॐ जय...।।2।।
वैर विचार कमठ ने भाई, उपसर्ग किया भारी-2
समता रस में लीन हुए प्रभु, जिनवर अविकारी।। ॐ जय...।।3।।
अहिच्छत्र में प्रभु जी तुमने, 'विशद' ज्ञान पाया-2
सौ इन्द्रों ने प्रभु के, पद में सिरनाया।। ॐ जय...।।4।।
भक्त आपके चरणों, आकर सिरनाते-2
भक्ति भाव से गीत प्रभु जी, चरणों में गाते।। ॐ जय...।।5।

आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज पूजन

स्थापना

दोहा- विशद गुणों के कोष हैं, विशद सिन्धु है नाम।
विशद करें आह्वान हम, करके चरण प्रणाम॥

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(पूजा-अष्टक)

हम हैं मन वच तन के रोगी, गुरुवर स्वस्थ आत्म के भोगी।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! जलं निर्वपामीति स्वाहा।

राग द्वेष गुरु मोह नशाए, दुख संसार के हमने पाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

वैभाविक परिणति में आए, शुद्धातम को हम विसराए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

रहा काम का फूल विषैला, करते हम आतम को मैला।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन की नित चाह बढ़ाए, क्षुधा रोग से ना बच पाए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आँख मीचते होय अंधेरा, जब जागे तव होय सबेरा।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूल धूप की हमे सताए, कर्म पूर्ण मेरे क्षय जाये।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की आशा सदा बढ़ाई, लेकिन पूर्ण नहीं हो पाई।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! फलं निर्वपामीति स्वाहा।

विशद अर्घ्य हम यहाँ चढ़ाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
जिनके पद हम पूज रचाते, पद में सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नीर भराया कूप से, देते शांतीधार।
अष्टकर्म को नाश कर, मैट सकें संसार।।

।। शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा- पुष्पांजलि को हम यहाँ, लाये सुरभित फूल।
मुक्ती पाने के लिए, साधन हों अनुकूल।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा-लघुनन्दन तीर्थेश के, जिनवाणी के लाल।
विशद सिन्धु गुरुदेव की, गाते हैं जयमाल॥

(छन्द-तामरस)

जय जय जय गुरुदेव नमस्ते, पूजें चरण सदैव नमस्ते।
विराग सिन्धु के शिष्य नमस्ते, उज्जवल भाग्य भविष्य नमस्ते॥
अर्हत् सम स्वरूप नमस्ते, विशद सिन्धु जग भूप नमस्ते।
अतिशय महिमा वान नमस्ते, करते जग कल्याण नमस्ते॥
शब्दों में लालित्य नमस्ते, हितकारी साहित्य नमस्ते।
वाणी जगत हिताय नमस्ते, दर्शन दर्श प्रदाय नमस्ते॥

सोरठा-पत्थर में भगवान, दिखते भक्ती भाव से।
करते हम गुणगान, गुरुवर जो साक्षात् हैं॥

सारा जग यह जिनके चरणों, नत हो शीश झुकाता है।
भाव सहित जिनकी अर्चा कर, अतिशय महिमा गाता है॥
इतनी शक्ति कहाँ हम गुरु को, हृदय में शुभ आह्वान करें।
अल्प बुद्धि से उनके चरणों, का हम भी गुणगान करें॥
है श्मशान सरीखा हे गुरु!, मन मंदिर का देवालय।
आन पधारो हृदय हमारे, तो बन जाये सिद्धालय॥

दोहा- हम दोषों के कोष हैं, हुए विशद मदहोश।
दर्शन करके आपका, मन में जागा होश॥

विशद सिन्धु,हे विशद सिन्धु!, हम करते हैं चरणों वंदन।
भक्ति सुमन करते हैं अर्पित, भाव सहित करते अर्चन॥
जिनकी चर्चा अर्चा करके, खो जाए मन का क्रन्दन।
ऐसे गुरु के चरण कमल कों, करते हैं हम अभिनन्दन॥
करुणामूर्ती परम विरागी, यह जग करता अभिनन्दन।
शिव पद के राही तव चरणों, मेरा बारम्बार नमन॥

दोहा- ज्ञानामृत में भाव से, श्रद्धा का रस घोल।
तीनों योग सम्हाल के, गुरु की जय जय बोल॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय! जयमाला
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- महिमा जिन की हैं अगम, पायें कैसे पार।
करें आरती भाव से, वंदन बारंबार॥

॥ इत्याशीर्वाद:॥

(संघस्थ) -ब्र. आरती दीदी

आचार्य श्री का अर्घ

गुरुवर की हम महिमा गाते हैं, अपने हम सौभाग्य जगाते हैं।
चरणों में आते हैं अर्घ चढ़ाते हैं, करते हैं गुरु पद नमन।।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवसर आया है,
गुरुवर का शुभ आशिष पाया है।।

ॐ ह्रूँ प.पू. सर्व आचार्य परमेष्ठी यतीवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्व साधु परमेष्ठी का अर्घ

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते हैं, जो उपसर्ग परीषह सहते हैं।
समता जो धारे हैं, मुनिवर हमारे हैं, करते हम गुरु पद नमन।।
क्योंकि, बड़े पुण्य से अवसर आया है,
मुनिवर का शुभ आशिष पाया है।।

ॐ ह्रः श्री साधु परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुच्चय महाअर्घ

अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु के चरण नमन।
जैनागम जिन चैत्य जिनालय, जैन धर्म को शत् वन्दन।।
सोलह कारण धर्म क्षमादिक, रत्नत्रय चौबिस तीर्थेश।
अतिशय सिद्धक्षेत्र नन्दीश्वर, की अर्चा हम करें विशेष।।